फील गुड की राजनीति

डॉ. एम. डी. थॉमस

हाल ही मं रेल गाड़ी मं सफर करते समय किसी युवा आदमो को एसा कहते हुए मुझे सुनने को मिला, 'जिस जगह राजनीति घुस गयी हो, यों समझिए, वह जगह बबाद हो गयी है।' यह सुनकर मुझे बहद ताज्जुब लगा। युवा पोढ़ी ने राजनीति और राजनीतिज्ञों को कितनी गहराइ मं समझ रखा है! मुझे प्व चुनाव आयुक्त श्री लिंगदोह की बात याद आयी। उन्होंने राजनीतिज्ञों की तुलना कैंसर से की थी। जिस ढंग से कैंसर एक लाइलाज बोमारी है, ठीक उसी प्रकार राजनीतिज्ञों ने भी देश को एसा बोमार कर रखा है कि उससे छुटकारा पाना नाममकिन लगता है। 'राजनीति' शब्द का प्रयोग लोग मानव समाज की सबसे गन्दी चीज़ के पयायवाची के रूप मं करते रहते हैं। यह बात आम लोगों की बातचीत तक उतर कर आयी है कि राजनीति से समाज का असली खतरा है।

गुजरात मं जब मोदी सरकार का साम्प्रदायिक ताण्डव चल रहा था, राष्ट्र के प्रधानमत्री महोदय वाजपयी जी ने मोदी जी को राष्ट्रधर्म की नसीहत दी। ज़ाहिर है कि जान बझकर मज़हबी राजनीति खेलने वाले मोदी जी पर इस नसीहत का कोइ असर नहीं पड़ा। नसीहत देने वाले प्रधानमत्री जी का भी मौके का फायदा उठाने से बढ़कर कोइ इरादा नहीं था । यों समझना चाहिए, मोदी जी और वाजपय जी मज़हबी राजनीति के दो खिलाड़ी थे। दोनों को अपने-अपने काम से मतलब था।

कुछ समय से 'फील गुड' के नारे लगाये जा रहे हैं। यह 'फील गुड' शासक वग के राजनीतिज्ञों की एक नवीनतम चाल है। यह खास तौर पर देश की आम जनता द्वारा भुगतती जा रही 'फील बड' की हकीकत को छिपाने के लिए अपनाया गया एक कुतन्त्र है। कल्पना मात्र खराब माहौल ख़ुशनुमा नहीं हो सकता। 'सब कुछ ठीक-ठाक है' — एसा आभास कराने मात्र से कोइ यकीन करेगा, एसा सोचना बवकूफी ही है। देश के नागरिकों वे साथ इससे बड़ा धोखा वया है?

गिरगिट का करिश्मा है, वह जहाँ बठता है वहाँ का रंग धारण करता है। माहौल के मुताबिक अपना रंग बदलकर वह अपनी सुरक्षा करता है। अब भारत के राजनीतिज्ञ, खास तौर पर वे, जिनके हाथ मं शासन का बागडोर है, गिरगिट से भी तेज रफ्तार मं मौके के मुताबिक अपना रंग बदलने मं माहिर हो गये हैं। उनके नारे बार-बार बदलते हैं। राजनीतिज्ञों के वक्तव्यों का मकसद लोगों को भड़काना मात्र है। देश की भलाइ से उनका कोइ लेना-देना नहीं है। लोगों को सुनने मं जो अच्छा लगे वे वही कहा करते हैं। गिरगिट की राजनीति खेल कर भारत के शीर्ष राजनीतिज्ञ अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। भ्रष्टाचार के खराब माहौल को खुशनुमा घोषित कर वे जनता-जनार्दन को 'फील गुड' का रसायन पिलाते और उन्हें इस लोक मं स्वग वा अहसास कराते हैं। देश की असली हालत से हमारे राजनीतिज्ञ वाकिफ नहीं है, एसा नहीं हो सकता। व काले पर सफेद रंग पोतकर भद्दे को आकषक बनाने का ढोंग रचते हैं। कुछ दिन पहले की ही बात है। 'घर वापसी' की राजनीति की चपट मं नहीं फँसने वालों को साम्प्रदायिक ताकतों द्वारा जबरदस्ती से सिर मुंडवाया गया। दूसरे मजहब के सदस्य होने के कारण छेड़ने-हत्या करने तथा दंगा-फसाद करने-करवाने की बहुत घटनाएं कुछ सालों से होती रहती हैं। एसी गिरी हुइ हरकतों द्वारा भारत की इज्जत दुनिया के दूसरे देशों के सामने ही नहीं, भारत के भी नेक इन्सानों के सामने धूमिल हो चुकी है।

साथ ही, भारतीय सँस्कृति और उदय का डंका पोटने वाले राजनीतिज्ञ और धर्म-नेता 'विविधता मं एकता' का नारा तो लगाते हैं। लेकिन वे भारतीय समाज को टुकड़े-टुकड़े करने पर ही तुले हैं। बहुदेशीय कम्पनियाँ गरीबों को जीने के हर से वंचित करने की दिशा मं उत्तरोत्तर बढ़ते हैं। विकास की योजनाओं का फायदा, खासकर उच्च वग के लोंगों को ही मिलता है। सामजिक बुराइयाँ समाज को कइ प्रकार से खायी जा रही है।

भारतीय समाज की एसी हालत मं गिरगिट की मानसिकता से गस्त राजनीतिज्ञ 'फील गुड' की राजनीति खेल रहे है। यह वास्तव मं अचरज की बात है। वया जनता देश के एसे ठेकेदारों को कब तक सहन कर पायेगी? वया चुनावी नाटक मं वे ताली बजाव ार उन्हें सराहेगी? भारत के नागरिक दुनिया की सबसे भ्रष्ट राजनीति के लिए जिम्मदार राजनीतिज्ञों को मंह तोड़ जवाब देंगे, यह निश्चित है। आने वाले चुनाव मं वह देश की भलाइं के लिए अपना फजं निभाने के लिए हिम्मत जुटायेगी, यह उम्मोद है। यही है वक्त का तकाजा भी।

डॉ. एम. डी. थॉमस
संस्थापक निदेशक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ हार्मनि एण्ड पीस स्टडीज़, नयी दिल्ली
प्रथम मंजिल, ए 128, सेक्टर 19, सेक्टर 19, द्वारका, नयी दिल्ली 110075

दूरभाष: 09810535378 (p), 08847925378 (p), 011-45575378 (o)
ईमेल : mdthomas53@gmail.com (p), ihps2014@gmail.com (o)
बेबसाइट: www.mdthomas.in (p), www.ihpsindia.org (o)

Twitter: https://twitter.com/mdthomas53
Facebook: https://www.facebook.com/mdthomas53
Academia.edu: https://independent.academia.edu/MDTHOMAS